जैनम् श्री कक्षाएं छह वर्षीय पाठ्यक्रम पर आधारित
संस्कार आर्य–आर्या से मोक्ष आर्य–आर्या तक के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम
(पूर्वार्ध व उत्तरार्ध के रूप में)

विशेष जानकारी–

1. सन् 2021 से पाठशाला के सभी बच्चों को इस पाठ्यक्रम के अनुसार अध्ययन करवाकर परीक्षा दिलवा सकते हैं।
2. परीक्षा मौखिक अथवा लिखित रूप में पाठशाला के शिक्षकों द्वारा आयोजित की जावेगी, परिणाम पत्र (अंक–सूची) पाठशाला परिवार प्रमुख संयोजक के पास प्रेषित करने पर पचास प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले विद्यार्थियों को पहले चरण में सफलता प्राप्ति के फलस्वरूप प्रमाण–पत्र भाइयों के लिए "संस्कार आर्य" तथा बहनों के लिए "संस्कार आर्या" से सम्मानित किया जावेगा।
3. पाठ्यक्रम की योजना इस प्रकार है–

पहला चरण	–	संस्कार आर्य–आर्या	दूसरा चरण	–	सम्यक्व आर्य/आर्या
तीसरा चरण	–	दर्शन आर्य/आर्या	चौथा चरण	–	ज्ञान आर्य/आर्या
पांचवा चरण	–	चारित्र आर्य/आर्या	छटवां चरण	–	मोक्ष आर्य/आर्या

4. पूर्वार्ध और उत्तरार्ध दोनों की परीक्षा होने पर सम्मिलित अंकों के आधार पर सूची बनावे जैसे पूर्वार्ध में 70 प्रतिशत एवं उत्तरार्ध में 90 प्रतिशत आने पर 70 + 90 = 160 ÷2 = 80% अंक माने जावेंगे।
5. प्रथम चरण के पाठ्यक्रम कक्षा पांच से ऊपर के विद्यार्थी दो माह में कक्षा तीन से ऊपर के चार माह में तथा छोटे बच्चें छह माह अथवा साल भर में भी विषय पूर्ण कर परीक्षा दे सकते हैं। अथवा बच्चों का विषय पूर्ण होने पर योग्यतानुसार परीक्षा लेकर उन्हें आगे बढ़ाया जा सकता है।
6. पाठशाला शिक्षक स्वंय प्रश्नपत्र तैयार करके बच्चों की परीक्षा लेवें अथवा पाठशाला संचालक मण्डल का निवेदन होने पर प्रश्न–पत्र तैयार करके पहुँचाये जा सकते हैं।
7. पाठशाला के सभी बच्चों में जो समर्थ/सक्षम हों उनकी प्रथम चरण के पूर्वार्ध एवं उत्तरार्ध की मई माह में परीक्षा ले ले जिससे 15 से 30 जून 2021 तक प्रमाण–पत्र विद्यार्थियों तक पहुँचाये जा सके। आगे के वर्षो में पूर्वार्ध की परीक्षा मई माह में एवं उत्तरार्ध की परीक्षा नबम्वर माह में आयोजित करें।
8. पाठ्यक्रम जैनम् श्री कक्षाएं मूल पृष्ठ 1 से 240 परिशिष्ट 1–52 तथा शुभोपयोग से तैयार किया गया है तथा अन्य भी थोड़ा कुछ है। अन्य विषय पाठशाला शिक्षकों को ज्ञात होगें अथवा ज्ञात करना होगा। समझ न आने पर सूचित करें तो उन्हें वह विषय भी उपलब्ध करा दिये जावेंगें।
9. पाठशाला संचालन का मुख्य उद्देश्य बच्चों को संस्कार प्रदान करना है। फिर भी बच्चों के उत्साह वर्धन हेतु परीक्षा ले सकते हैं किन्तु संचालक ईमानदारी के साथ ही परीक्षा लेवें अन्यथा नहीं।

10. बच्चों के लिए पहले चरण का पाठ्यक्रम पूर्ण करावे फ़िर क्रमशः आगे के पाठ्यक्रम पूर्ण करावें महिला अथवा पुरूष पाठशाला में दूसरे चरण के पाठ्यक्रम से परीक्षा ली जा सकती है।
11. पचास प्रतिशत से कम अंक लाने वाले विधार्थियों को पुनः परीक्षा दिलावें भले ही वह पंद्रह दिन बाद लेवे या दो माह बाद।
12. प्रत्येक पाठ्यक्रम में इकतीस बिन्दू (विषय) की अनुक्रमणिका बनाई है जिसमें तारा (☆) बना है उस विषय को परीक्षा में रखना अनिवार्य नहीं है। मात्र उनकी तैयारी करवा लेवें जिससे ज्ञान बढ़े।
13. सभी पाठशाला शिक्षकों के लिए जैनम् श्री कक्षाएं पंचवर्षीय पाठ्यक्रम पुस्तक एवं शुभोपयोग पुस्तक निःशुल्क उपलब्ध हैं।
14. कक्षा पांचवी से ऊपर के सभी पाठशाला के बच्चों एवं महिला विद्यार्थियों के लिए शुभोपयोग की पुस्तक निःशुल्क उपलब्ध है। आवश्यकता होने पर निम्नलिखित नम्बर पर सूचित करें:–
    1. अविनाश जैन "टोनी" 9425636118
    2. महेश जैन "नीलम" 9425147972
    3. संजय जैन "मित्तल" 9425135336
15. परीक्षा के लिए प्रश्न बनाने हेतु देखे जैनम् श्री कक्षाएं पृ. 210 पर जैसे– सही/गलत/हां/ना/अधूरी पंक्ति पूरी करें/खाली स्थान भेद लिखें/परिभाषा/जोड़ी बनाएं/कहानी पूर्ण करें।
16. स्तोत्र पाठों के उच्चारण के लिए **youtube** चैनल में **nirvage sagar ji** टाईप कर उससे सुनकर भी उच्चारण की शुद्धता कर सकते हैं।
17. पाठ्यक्रम को फोटोकॉपी करवाकर सभी कक्षाओं में चिपका देवें ताकि सभी शिक्षकों को इसकी जानकारी मिलती रहे।
18. पाठ्यक्रम की पुस्तकें विद्यासागर पाठशाला डॉट कॉम (http://vidhyasagarpathshala.com) गूगल पर भी उपलब्ध है। वेवसाइट का नाम बोलने अथवा टाईप करने पर लिस्ट आती है। उसमें सर्वप्रथम वेवसाइट की सूची को क्लिक करने पर वेवसाइट का मुख्य पृष्ट आता है जिसमें बडे बाबा की फोटो के नीचे वीडियो, आडियो, बुक और पाठशाला चार ऑप्सन आते हैं उनमें बुक को क्लिक करने पर पाँच विषयों की सूची आती है जिसमें जैनम् श्री कक्षाएं क्लिक करने पर तीस अध्यायों की सूची प्रस्तावना एवं परिशिष्ट भी है तथा पाठशाला इंट्रेस्ट क्लिक करने पर शुभोपयोग हाँ हाँ ना ना आखिर क्यों, जैनत्व की गौरव गाथा जैनम् श्री कक्षाएं प्रश्न संग्रह इत्यादि पुस्तक डाउनलोड की जा सकती हैं।

पाठशाला परिवार संयोजक प्रमुख
पूरा पता– अविनाश जैन "टोनी" महावीर एजेन्सी
औबेदुल्लागंज रायसेन (म.प्र.)

संस्कार "पूर्वार्ध"

प्रार्थनाः–	1.	वंदना गीत "हम वंदन करते हैं....."	परिशिष्ट पृ. 42
	2.	करना मन ध्यान महामंत्र	मुख्य पृ. 84
	3.	महावीर की हम संतान	प.पृ. 45
	4.	देशों में देश हिन्दुतान	मु.पृ. 182
	5.	संत साधु बनके विचरूँ	मु.पृ. 56
	6.	एक, सोलह, तेईस, चौबीसवें तीर्थंकर का अर्घ पाठ	
जिनागमः–	7.	आत्मा एक से तीर्थंकर चौबीस तक की गिनती	
	8.	जीव, गति, कषाय, परमेष्ठी, पाप, इन्द्रिय के भेद/नाम	
	9.	चौबीस तीर्थंकरों के नाम, णमोकार मंत्र शुद्ध उच्चारण	
	10.	नगर के मंदिर उनके मूलनायक भगवान, वेदियों का ज्ञान	
	11.	देव–शास्त्र–गुरु एवं माता–पिता–शिक्षक की अभिवादन विधि	
भजनः–	12.	काया की काठी, छोटे–छोटे शिष्य	मू.पृ. 23–37
कविता	13.	अम्मा अम्मा मुझको, हायकू चारों	मू.पृ. 16, 4
एवं अन्य	14.	शास्त्रदान का फल, ओ मेरे जादू के थैले	प.पृ. 18
	15.	दिनचर्या का पाठ, भोजन मंत्र	प.पृ. 20, 226
	16.	धार्मिक नारे, सारे जहाँ से न्यारा	प.पृ. 27, 7
	17.	सीखों, निरोगता की रामबाण औषध में दिया छंद	प.पृ. 29 च
	18.	आओ बच्चों खेले खेल, सुविचार "जिस पर जो"	मू.पृ. 49, 42
	19.	संस्कार पाठ (हमें आचरण सिखलाती कोई चौदह)	प.पृ. 3
	20.	हाँ–हाँ ना–ना (किशमिश खाना– हाँ कोई चौबीस)	प.पृ. 2
	21.	संस्कार ज्ञान (जो पाठशाला..... कोई बीस)	मू. ट
	22.	मेरी भावना (मैत्री भाव जगत..... मात्र चार पंक्ति)	मू.पृ. 101
	23.	प्रभु पतित पावन ..... चार पंक्तियाँ	शु.पृ. 89
	24.	राजा राणा छत्रपति ..... चार पक्तियाँ	शु.पृ. 103
	25.	**A For O My Adinath .....** चार तीर्थंकर	प.पृ. 48
स्तोत्रः–	26.	शांतिनाथ स्तवन, दर्शन पाठ ..... एक एक श्लोक	मू.पृ. 8, 15
कहानियाँ	27.	तत्वार्थ सूत्र मंगलाचरण ..... पाँच सूत्र	मू.पृ. 183
चिंतन	28.	मुंह से निकले शब्द, करनी का फल	मू.पृ. 23, 43
	29.	महात्मा गाँधी पर जैनधर्म, सहना सीखों	मू.पृ. 2, 123
	30.	गुरु वंदना के दोहे ..... कोई दस	शुभोपयोग पृ. 74
	31.	बिटिया रानी, दिल न दुःखाना ..... एक–एक काव्य	प.पृ. 50, 17

संस्कार "उत्तरार्ध"

प्रार्थनाः–	1.	नवदेव स्तवन "जय–जय–जय अरिहंतं"	मु.पृ. 1
	2.	गुरु ने जहाँ–जहाँ भी "दो छंद"	मु.पृ. 13
	3.	जीवन हम आदर्श बनाएँ	मु.पृ. 31
	4.	श्रद्धा हमारी भाषा, सुविचार कल का दिन	मु.पृ. 35, 44
	5.	हे भारती माँ	मु.पृ. 108
	6.	आठ, बीस, इक्कीस तीर्थंकर, बाहुबली जी एवं विद्यासागर जी अर्घ	
	7.	एक आत्मा से चौबीस तक के भेदो का ज्ञान जैसे 6 द्रव्य जीवादि	
	8.	जीव से इन्द्रिय तक की परिभाषा एवं भेद का लक्षण जैसे– लालच करना लोभ है	
	9.	तीर्थंकरों के क्रम, नाम, चिन्ह एवं परिभाषा पंचकल्याणक के नाम	
	10.	जैन श्रावक के तीन चिन्ह उनका प्रायोगिक रूप	मू.पृ. 4, 76
	11.	जैन तीर्थ, जैन शास्त्र, जैन पूर्वाचार्य के दस–दस नाम	
भजनः–	12.	उठे सबके कदम तरारम्	मू.पृ. 35
काव्य	13.	ढोल बजा के बोल हायकू (6)	मू.पृ. 66, 23–25
एवं अन्य	14.	नदिया न पिये कभी अपना	प.पृ. 28
	15.	जबसे घर में टी.वी. आई, मूकमाटी कविता	प.पृ. 28, 36
	16.	सप्त व्यसन, छुक–छुक...धर्मो की	प.पृ. 28, 29
	17.	जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र बोलिए	शु.पृ. 92
	18.	मोती की फसल, सुविचार	प.पृ. 18, 31
	19.	संस्कार पाठ (हमें आचरण..... पूरा)	प.पृ. 3
	20.	हाँ–हाँ ना ना (किशमिश खाना.....पूरा)	प.पृ. 2
	21.	संस्कार ज्ञान (जो पाठशाला..... पूरा)	मू.पृ. 2
	22.	दिनरात मेरे स्वामी, सुविचार	शु.पृ. 110, 35
	23.	प्रभु पतित पावन ..... पूरी	शु. पृ. 89
	24.	राजा राणा छत्रपति ..... पूरी	शु.पृ. 103
	25.	**A For O My Adinath .....** (बारह तीर्थंकर)	प.पृ. 48
स्तोत्रः–	26.	विद्यासागर विश्ववंद्य श्रमण (शुद्ध उच्चारण लेखन)	मू.पृ. 14
कहानी	27.	मंगलाष्टक ..... पहला काव्य	मू.पृ. 62
संस्मरण	28.	विषापहार, मन्त्र की शक्ति	मू.पृ. 59, 95
	29.	राजाबाई क्लाक टावर, संस्मरण	मू.पृ. 21, 200
	30.	गुरुवंदना के दोहे, दयाकरो..... पूरे	शुभो. पृ. 74
	31.	जिस भजन में गुरु	मू.पृ. 220

सम्यक्त्व "पूर्वार्ध"

प्रार्थनाः–	1.	अशरीरी सिद्ध भगवान	पृ. 6
	2.	णमोकार मय मेरा जीवन	पृ. 10
	3.	गुरु ने जहाँ–जहाँ भी	पृ. 13
	4.	अरिहन्त सिद्ध आचार्य	पृ. 17
	5.	मिथ्यातम नासवे को, सुविचार	पृ. 2, 8
जिनागमः–	6.	अष्ट द्रव्य से पूजनीय – हमारे नवदेवता	पृ. 1
	7.	जैन श्रावक का प्रथम कर्त्तव्य – देवपूजा	पृ. 4
	8.	एक आदर्श बेटी – मैना सुन्दरी	पृ. 7
	9.	सर्व कल्याणकारी महामंत्र – णमोकार	पृ. 9
	10.	सृष्टि का सनातन धर्म – जैनधर्म	पृ. 11
	11.	जिनधर्म तीर्थ प्रवर्तक – तीर्थंकर	पृ. 17
	12.	जिनवर मुख से निकली – जिनवाणी	पृ. 19
	13.	जैन कला तीर्थ – देवगढ़, हायकू चारों	पृ. 21, 25
	14.	गृहस्थ के योग्य षट्कर्म, सुविचार	पृ. 34, 32
भजनः–	15.	भवसागर में दुःख न मिलता	शु.पृ. 140
भावना	16.	केशरिया केशरिया, सुविचार (दोनों)	पृ. 7
काव्य	17.	कभी तो ये बाबा, संघर्षमय..... धन्य	पृ. 18, 9
	18.	चेतो चेतन निज में आओ	पृ. 20
	19.	राजा राणा छत्रपति, सुविचार (दोनों)	पृ. 21, 13
	20.	बिटिया रानी (पूरी कविता)	प. पृ. 50
	21.	छहढाला की पहली ढाल (मात्रपाठ)	शु. पृ. 151
	22.	शिक्षाप्रद दोहावली (अर्थसहित) दोहा – 9	पृ. 16
स्तोत्रः–	23.	शांतिनाथ स्तवन (अर्थसहित)	पृ. 8
कहानियाँ	24.	दर्शनपाठ (अर्थसहित)	पृ. 15
चिंतन	25.	उपदेश का प्रभाव, सुविचार	पृ. 3, 17
संस्मरण	26.	ज्ञानदान सर्वश्रेष्ट, काव्य ही ..... कुछ	पृ. 6, 24
	27.	विद्यासागर विश्ववंद्य श्रमण (अर्थसहित)	पृ. 14
	28.	शिवभूति मुनिराज (काव्य "कर्त्तृत्व.....")	पृ. 14, 24
	29.	संस्मरण – भव जल का तीर, सुविचार	पृ. 6, 29
	30.	तत्वार्थ सूत्र – प्रथम अध्याय, उच्चारण मात्र	शु.पृ. 164
	31.	ज्ञानोपयोग दो भेदों के नाम	प.पृ. 3

सम्यक्त्व "उत्तरार्ध"

प्रार्थनाः–	1.	नीलकमल के दल सम	पृ. 23
	2.	प्रभु पतित पावन मैं	शु.पृ. 89
	3.	सिद्धों की श्रेणी में आने	पृ. 30
	4.	इष्ट प्रार्थना "हमारे कष्ट मिट जायें"	पृ. 35
	5.	चरणों में आ पड़ा हूँ	पृ. 13
जिनागमः–	6.	संसार के प्रमुख पात्र– जीव–अजीव	पृ. 25
	7.	वर्तमान शासन नायक – भगवान महावीर	पृ. 28
	8.	जीवों की अवस्था विशेष – गतियाँ	पृ. 33
	9.	महासती अत्तीमब्बे	पृ. 40
	10.	तीर्थंकर बनाने वाली – सोलहकारण भावना	पृ. 36
	11.	श्रावकों के योग्य – षट् आवश्यक	पृ. 37
	12.	दुःख के पाँच साधन – पाप	पृ. 41
	13.	प्रथम तीर्थंकर – ऋषभ देव	पृ. 44
	14.	हमारे परम आराध्य – देव–गुरु–शास्त्र	पृ. 45
भजनः–	15.	लक्ष्य न ओझल होने पाये	पृ. 32
भावना	16.	छोटे–छोटे शिष्य है पर	पृ. 37
काव्य	17.	नाम जब से तुम्हारा वरण	पृ. 40
	18.	मुझे है काम ईश्वर से, काव्य, – "संयम की....."	पृ. 41, प.पृ. 29
	19.	जिसने रागद्वेष (मेरी भावना – पूरी)	पृ. 101
	20.	दिल न दुखाना (पूरी कविता)	प.पृ. 17
	21.	छहढाला दूसरी ढाल	शु. पृ. 152
	22.	शिक्षाप्रद दोहावली (अर्थ सहित) दोहा–10	पृ. 16
स्तोत्रः–	23.	श्री पच्चमहागुरु भक्ति (अर्थ सहित)	पृ. 22
कहानियाँ	24.	वीतराग स्तोत्र (अर्थ सहित)	पृ. 26
चिंतन	25.	पश्चाताप	पृ. 20
संस्मरण	26.	भेद विज्ञान की ज्योति	पृ. 26
	27.	काला अक्षर भैंस बराबर	पृ. 29
	28.	दृढ़ राखे श्रद्धान	पृ. 30
	29.	साधन एवं साधना	पृ. 32
	30.	तत्वार्थ सूत्र– दूसरा अध्याय – उच्चारण मात्र	पृ. 165
	31.	ज्ञानोपयोग तीन भेदों के नाम	पृ. 4

दर्शन "पूर्वार्ध"

प्रार्थनाः–	1.	इतनी शक्ति हमें देना दाता	पृ. 59
	2.	परम दिगम्बर मुनिवर देखे	शु.पृ. 86
	3.	मुझे ऐसा वर दे दे गुणगान	पृ. 56
	4.	जब जीवन का अंत हो	शु.पृ. 14
	5.	माता तू दया करके	पृ. 50
जिनागमः–	6.	पदार्थों को जानने के साधन – इन्द्रियाँ	पृ. 49
	7.	घोर उपसर्ग विजयी – भगवान पार्श्वनाथ	पृ. 51
	8.	मोक्ष की ओर ले जाने वाला – रत्नत्रय	पृ. 52
	9.	जैन कर्म सिद्धान्त – एक परिचय	पृ. 57
	10.	सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य – चाणक्य	पृ. 60
	11.	निर्भय बनाने वाली – बारह अनुप्रेक्षा	पृ. 65
	12.	जैन विद्वान परिचय	पृ. 67
	13.	जैन तत्व विवेचन	पृ. 90
	14.	संगति का प्रभाव, पात्र के भेद	पृ. 71, 75
	15.	तत्वाभ्यास की धुन, काव्य "सुनो बेटा"	पृ. 45, 70
	16.	द्रव्यलिंगी व भावलिंगी कौन ?	पृ. 54
	17.	सुख के पाँच भेद, मुक्तक (दोनों)	पृ. 68, 59
भजनः–	18.	करना मन ध्यान महामंत्र	पृ. 84
भावना	19.	पलके ही पलके बिछायेंगे	पृ. 84
स्तुति	20.	वैराग्य भावना	पृ. 64
	21.	छहढाला की तीसरी चौथी ढाल (मात्र पाठ)	शु.पृ. 153
	22.	सब कुछ तो मिल गया	पृ. 61
स्तोत्रपाठः–	23.	सरस्वती स्तोत्र (अर्थ सहित)	पृ. 77
कहानियाँ	24.	सुप्रभात स्तोत्र (अर्थ सहित)	पृ. 38
चिंतन	25.	दीपक और तलवार	पृ. 47
संस्मरण	26.	बुद्धि की परीक्षा	पृ. 50
	27.	इन्द्रिय सुख कैसा विषापहार	पृ. 59
	28.	गोखले की सत्य निष्ठा	पृ. 68
	29.	आचार्य वंदना सिद्ध, श्रुत, आचार्य भक्ति	शु.पृ. 223
	30.	तत्वार्थ सूत्र (तीसरा, चौथा– अध्याय)	शु.पृ. 167
	31.	ज्ञानोपयोग – चार भेदों के नाम	प.पृ. 5

दर्शन "उत्तरार्ध"

प्रार्थनाः–	1.	गुरुदेव दया करके	पृ. 82
	2.	जिनवर हमारे नेता	पृ. 35
	3.	हे प्रभु ज्ञान का दान दो	पृ. 215
	4.	श्री विद्यासागर जी गुरुवर	शु.पृ. 88
	5.	श्वास श्वास में तुझे बसायें	शु.पृ. 226
जिनागमः–	6.	सृष्टि का उत्थान पतनः– काल परिवर्तन	पृ. 73
	7.	जैनाचार (रात्रि भोजन त्याग एवं जलगालन)	पृ. 76
	8.	हमारे पथ प्रदर्शक – आचार्य कुन्द कुन्द स्वामि	पृ. 78
	9.	विश्व संरचना के प्रमुख घटक–द्रव्य	पृ. 81
	10.	जीवों की भावात्मक परिणति – लेश्या	पृ. 83
	11.	जैन पर्व एवं त्योहार	पृ. 85
	12.	संसार परिभ्रमण का मूल कारण – कषाय	पृ. 89
	13.	चारित्र चक्रवर्ती – आचार्य श्री शान्तिसागर जी	पृ. 91
	14.	तीन लोक का वर्णन करने वाला – तिलोयपण्णती	पृ. 84
	15.	संशय, विपर्यय, अनध्यवसाय	पृ. 82
	16.	सुख के पाँच भेद, सुविचार	पृ. 68, 81
	17.	सबके दिन सदा एक से नहीं रहते	पृ. 83
भजनः–	18.	श्री विद्यासागर विनम्र वे चरण	पृ. 80
भावना	19.	अब सौप दिया इस जीवन को	पृ. 90
स्तुति	20.	नीति अमृत	पृ. 71
	21.	छहढाला की पाँचवी–छटवी ढाल	शु.पृ. 159
	22.	मीठो–मीठो बोल	पृ. 78
स्तोत्रः–	23.	गोम्मटेश थुदि (अर्थ सहित)	पृ. 46
कहानियाँ	24.	महावीराष्टक (अर्थ सहित)	पृ. 53
संस्मरण	25.	भक्ति में शक्ति, मुक्तक	पृ. 55, 79
	26.	सच्चा मित्र कौन	पृ. 80
	27.	मन्त्र की शक्ति, काव्य "प्रत्येक....."	पृ. 95, 75
	28.	बात घर कर गई, सुविचार (दोनों)	पृ. 62, 78
	29.	जिन सहस्त्रनाम (प्रस्तावना) ☆	शु.पृ. 47
	30.	तत्वार्थ सूत्र (पाँचवा–छटवां अध्याय)	शु.पृ. 170
	31.	ज्ञानोपयोग – पाँच भेदों के नाम	प.पृ. 7

ज्ञान "पूर्वार्ध"

प्रार्थनाः–	1.	विद्यासागर गंगा मन निर्मल	पृ. 109
	2.	शत शत प्रणाम करते	शु.पृ. 91
	3.	भावना दिन रात मेरी	पृ. 122
	4.	हे भारती माँ! हे भारती माँ	पृ. 108
	5.	तीर्थ बिहारी गुरुराज	पृ. 106
जिनागमः–	6.	जैन विश्व संरचना – लोक अलोक	पृ. 97
	7.	महाकवि आचार्य ज्ञानसागर जी	पृ. 99
	8.	महापुण्य शाली – 63 शलाका पुरुष	पृ. 101
	9.	जैन जीव–विज्ञान– नारकी जीव	पृ. 105
	10.	जैन जीव विज्ञान– तिर्यंच्च जीव	पृ. 106
	11.	जैन जीव विज्ञान– मनुष्य जीव	पृ. 113
	12.	जैन जीव विज्ञान– देव जीव	पृ. 114
	13.	जैन इतिहास – भगवान महावीर की परम्परा	पृ. 115
	14.	समग्र जिनागम का प्रतिपादक ग्रन्थ – तत्वार्थ सूत्र	पृ. 123
	15.	जैन जाति नहीं धर्म है, सत्य का रास्ता	पृ. 100
भजनः–	16.	आशा रहे न कल की, सुविचार	पृ. 109, 98
भावना	17.	आलोचना पाठ, सुविचार	पृ. 133, 104
स्तुति	18.	उड़ा जा रहा है पंछी	पृ. 143
	19.	छुक–छुक रेल चली	पृ. 28
	20.	चारित्र चक्रवर्ती	शु.पृ. 146
	21.	चौबीस तीर्थंकर स्तवन (1–12)	पृ. 95
	22.	चौबीस तीर्थंकर स्तुति (1–12) संस्कृत ☆	पृ. 44
स्तोत्रः–	23.	मंगलाष्टक "अर्थ सहित"	पृ. 62
कहानियाँ	24.	विद्याष्टक "अर्थ सहित"	पृ. 69
संस्मरण	25.	कुलभूषण –देशभूषण, सुविचार "धन से ....."	पृ. 104, 107
अन्य	26.	चारों अनुयोग उपयोगी	पृ. 119
	27.	भारत की प्राचीन भाषा – प्राकृत	पृ. 108
	28.	सहना सीखों "संस्मरण"	पृ. 123
	29.	जिनसहस्त्रनाम "प्रथम–द्वितीय शतकम्" ☆	शु.पृ. 50
	30.	तत्वार्थ सूत्र "सातवां–आठवां अध्याय"	शु.पृ. 173
	31.	ज्ञानोपयोग – छह भेदों के नाम	प.पृ. 8

ज्ञान "उत्तरार्ध"

प्रार्थनाः–	1.	जब कोई नहीं आता बड़े बाबा	पृ. 107
	2.	मात–पिता और गुरु चरणों में	पृ. 125
	3.	जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र	पृ. 135
	4.	चरणों में नमन हमारा	पृ. 139
	5.	पुनः दर्शन, पुनः दर्शन	पृ. 143
जिनागमः–	6.	मानवीय शुद्ध आहार – शाकाहार	पृ. 121
	7.	संसार अथवा मुक्ति का कारण – ध्यान	पृ. 124
	8.	श्रावक के विकास का क्रम – प्रतिमा विज्ञान	पृ. 129
	9.	संसार दुःख का मूल कारण – मिथ्यात्व	पृ. 134
	10.	श्रावक का प्रथम कर्त्तव्य – जिनपूजा	पृ. 137
	11.	रामायण का सच्चा स्वरूप – जैन राम कथा	पृ. 140
	12.	अद्वितीय जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश	पृ. 139
	13.	निमित्त उपादान, जैन गीता – समणसुत्तं	पृ. 135, 130
	14.	जैन दर्शन का प्रमुख सिद्धान्त ग्रन्थ – षट्खण्डागम	पृ. 122
	15.	विदेशों में जैन साहित्य, स्वतंत्रता संग्राम में जैन	पृ. 102, 107
भजनः–	16.	दीपों की थाल सजाई, काव्य "सा रे ग म"	पृ. 112, 144
भावना	17.	आगे–आगे अपनी ही अर्थी	पृ. 123
स्तुति	18.	पारस रे तेरी कठिन डगरिया	प.पृ. 45
	19.	प्रभोदर्श कर आज घर, सुविचार	प.पृ. 34, 114
	20.	मंगल भावना	शु.पृ. 52
	21.	चौबीस तीर्थंकर स्तवन (13–24)	पृ. 102
स्तोत्रः–	22.	चौबीस तीर्थंकर स्तुति (13–24) संस्कृत ☆	शु.पृ. 45
कहानियाँ	23.	परमानन्द स्तोत्र "अर्थ सहित"	पृ. 87
संस्मरण	24.	तित्थयर भत्ति "अर्थ सहित"	पृ. 94
अन्य	25.	ब्रहमगुलाल मुनि, काव्य "जो जीभ....."	पृ. 128, 138
	26.	विशल्या की कथा, सुविचार	पृ. 132, 139
	27.	आत्मा में अनन्त शक्ति	पृ. 125
	28.	अमृत के बदले जहर, आठ प्रकार की मुक्ति	पृ. 67, 111
	29.	जिनसहस्त्रनाम "तृतीय–चतुर्थ शतकम्" ☆	शु.पृ. 52
	30.	तत्वार्थ सूत्र (नवमां–दसवां अध्याय)	शु.पृ. 170
	31.	ज्ञानोपयोग – सात भेदों के नाम	प.पृ. 9

चारित्र "पूर्वार्ध"

प्रार्थनाः–	1.	भो आचार्य श्री विद्यासागर	पृ. 147
	2.	मिलता है सच्चा सुख केवल	पृ. 156
	3.	गुरु तू न मिला सारी दुनिया	पृ. 163
	4.	रोम – रोम से निकले प्रभुजी	पृ. 164
	5.	जिनवाणी जग मैया	पृ. 172
जिनागमः–	6.	श्रमणों की चमत्कारिक शक्तियाँ – चौसठ ऋद्धियाँ	पृ. 145
	7.	श्रावकों के बारह व्रत	पृ. 148
	8.	148 कर्म प्रकृतियाँ और उनका फल	पृ. 153
	9.	आत्मिक उन्नति के सोपान – दश धर्म	पृ. 157
	10.	साधु परमेष्ठी की चर्या – 28 मूलगुण	पृ. 161
	11.	आयु कर्म एवं उसकी बंध प्रक्रिया	पृ. 163
	12.	आत्मा त्रैकालिक शुद्ध नहीं	पृ. 180
	13.	कुशल व्यापारी कौन ?	पृ. 176
	14.	उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य, सुविचार (तीनों)	पृ. 145, 147
	15.	सम्यग्ज्ञान का स्वरूप	पृ. 153
भजनः–	16.	वंदू श्री अरिहंत पद "बारह भावना"	पृ. 175
भावना	17.	आत्म बोध "धन्य धन्य, सुविचार	प.पृ. 1, 150
स्तुति	18.	हे मेरे गुरुवर इक	पृ. 198
	19.	गुरु की छाया में, सुविचार	पृ. 222, 149
	20.	निर्वाण काण्ड	शु.पृ. 133
	21.	एकीभाव पद्यानुवाद (1–12)	शु.पृ. 141
स्तोत्रः–	22.	सुनीति शतक (1–25)☆	शु.पृ. 202
कहानियाँ	23.	भक्तामर स्तोत्र (1–12) अर्थ सहित	पृ. 94
संस्मरण	24.	एकीभाव स्तोत्र (1–6) अर्थ सहित	पृ. 165
अन्य	25.	बड़ों की दशा और एकता	पृ. 93
	26.	सुकुमाल मुनि "सुविचार"	पृ. 151, 143
	27.	भावना का चमत्कार	पृ. 173
	28.	संस्मरण गलत समझ, उँचाइयों को पाने	पृ. 185, 200
	29.	जिन सहस्त्रनाम "पंचम, षष्टम् शतकम्" ☆	शु.पृ. 54
	30.	इष्टोपदेश (उच्चारण पात्र)	शु.पृ. 180
	31.	ज्ञानोपयोग – आठ, नौ भेदों के नाम	प.पृ. 9

चारित्र "उत्तरार्ध"

प्रार्थनाः–	1.	तुम्हें छोड़कर किसको देखूँ	शु.पृ. 138
	2.	धीरे–धीरे चलो जी मंदिर	पृ. 149
	3.	आत्म शक्ति से ओत–प्रोत	पृ. 224
	4.	करता रहूं गुणगान मुझे	पृ. 220
	5.	इतना तो कर दो स्वामी	पृ. 211
जिनागमः–	6.	मोक्षमहल की प्रथम सीढ़ी – सम्यग्दर्शन	पृ. 169
	7.	कर्मों की अवस्थाएं – दस करण विवेचन	पृ. 171
	8.	सच्चे सुख का एकमात्र साधन – सम्यग्ज्ञान	पृ. 177
	9.	कर्म क्षय का महत्वपूर्ण साधन – बारह तप	पृ. 179
	10.	आचरण की ओर बढ़ते कदम – सम्यक्चारित्र	पृ. 185
	11.	जैन जीव विज्ञान – शरीर, प्राण एवं जन्म	पृ. 186
	12.	जैन अमर शहीद – मोतीचंद शाह	पृ. 188
	13.	निश्चय नय – अवक्तव्य	पृ. 191
	14.	लौकिक धन श्रेष्ठ या ज्ञानधन	पृ. 201
	15.	आत्मा का बहुमान या शरीर का	पृ. 208
भजनः–	16.	पाप–पुण्य का फल (बारह काव्यमय प्रश्न)	प.पृ. 30
भावना	17.	तत्वार्थ सूत्र "अर्घावली"	प.पृ. 1
स्तुति	18.	मन की तरंगे मार ले	शु.पृ. 232
	19.	बिन तेरे गुरुवर मेरा, "मुक्तक"	पृ. 224, 176
	20.	अध्यात्म दोहावली	शु.पृ. 70
	21.	एकीभाव पद्यानुवाद (13–25)	शु.पृ. 143
स्तोत्रः–	22.	सुनीति शतक (26–50)☆	शु.पृ. 204
कहानियाँ	23.	भक्तामर स्तोत्र (13–24) अर्थ सहित	पृ. 110
संस्मरण	24.	एकीभाव स्तोत्र (7–12) अर्थ सहित	पृ. 174
अन्य	25.	रूपवान राजा सुविचार	पृ. 160, 150
	26.	जब जागो तभी सबेरा	पृ. 164
	27.	अकृत पुण्य सुविचार	पृ. 178, 155
	28.	अहिंसा के प्रति रुचि, संस्मरण	पृ. 211
	29.	जिन सहस्त्रनाम सप्तम् अष्टम् शतकम् ☆	शु.पृ. 58
	30.	प्रश्नोत्तर रत्नालिका (1–15) अर्थ सहित	पृ. 229
	31.	ज्ञानोपयोग – दस, ग्यारह, बारह भेदों के नाम	प.पृ. 11

मोक्ष "पूर्वार्ध"

प्रार्थनाः–	1.	पार्श्वनाथ स्तवन, जल वर्षाते	पृ. 221
	2.	आसरा इस जहाँ में मिले	पृ. 198
	3.	पच्चमहागुरु भक्ति	शु.पृ. 105
	4.	जय जय गुरु की बोल के	शु.पृ. 234
	5.	जिनवाणी मोक्ष नसैनी है, सुविचार	प.पृ. 47, 228
जिनागमः–	6.	जीव के परिणाम – गुणस्थान परिचय	पृ. 193
	7.	श्रेष्ट आध्यत्मिक ग्रंथ – "समयसार"	पृ. 196
	8.	आत्मा का स्वरूप – नय विविक्षा से	पृ. 197
	9.	वस्तु को जानने के उपाय – प्रमाण, नय, उपनय	पृ. 201
	10.	वस्तु स्वरूप की कथन पद्धति – सप्तभंगी	पृ. 203
	11.	जैन परमाणु विज्ञान – अणु एवं स्कन्ध	पृ. 209
	12.	जैनत्व की गौरव गाथा – जैन तीर्थक्षेत्र	पृ. 212
	13.	अद्वितीय रचना – सिरिभूवलय ग्रन्थ	पृ. 195
	14.	अध्यात्म की अपेक्षा उपयोग	पृ. 215
	15.	व्रती बनने की प्रेरणा, "मुक्तक"	पृ. 237, 188
भावनाः–	16.	सामायिक चर्या	पृ. 208
भजन	17.	दुनिया में गुरू हजारों, "संस्मरण"	पृ. 216, 199
स्तुति	18.	हूँ चैतन्य चिदानंद धाम	पृ. 228
	19.	मेरे अर्हत् पावन है	पृ. 230
	20.	सूर्योदय दोहावली	शु.पृ. 68
	21.	कल्याण मंदिर स्तोत्र (1–22) ☆	शु.पृ. 20
स्तोत्रः–	22.	सुनीति शतक (51–75)☆	शु.पृ. 206
कहानियाँ	23.	भक्तामर स्तोत्र (25–36) अर्थ सहित	पृ. 126
संस्मरण	24.	एकीभाव स्तोत्र (13–18) अर्थ सहित	पृ. 181
अन्य	25.	चन्द्रगुप्त मुनि द्वारा गुरुसेवा	पृ. 184
	26.	पूजा का फल, सुविचार (दोनों)	पृ. 204, 222
	27.	त्याग की महिमा	पृ. 207
	28.	चार मूर्ख	पृ. 232
	29.	जिनसहस्त्रनाम "नवम्, दशम्, शतकम्" ☆	शु.पृ. 58
	30.	प्रश्नोत्तर रत्नमालिका (16–26) अर्थ सहित	पृ. 236
	31.	ज्ञानोपयोग – तेरह, चौदह, पंद्रह भेदों के नाम	प.पृ. 12

मोक्ष "उत्तरार्ध"

प्रार्थनाः–	1.	प्रेम भाव हो सब जीवों में	शु.पृ. 111
	2.	स्वर्ग से सुंदर, सपनों से प्यारा	प.पृ. 20
	3.	तेरी छत्रछाया प्रभु जी	पृ. 127
	4.	गुण रत्नाकर विद्यासागर	शु.पृ. 231
	5.	श्री सम्मेद शिखर वंदना	शु.पृ. 97
जिनागमः–	6.	जैन ज्यातिर्लोक "सूर्य–चन्द्रमा"	पृ. 217
	7.	श्रावक व श्रमण का अंतिम कर्त्तव्य–सल्लेखना	पृ. 219
	8.	जैन दानवीर श्रावक–भामाशाह	पृ. 221
	9.	दिगम्बर जैन मुनिचर्या का ग्रन्थ – मूलाचार	पृ. 223
	10.	भक्ष्याभक्ष्य विवेक – जैन आहार विज्ञान	पृ. 225
	11.	कर्म निर्जरा का साधन – परीषह जय	पृ. 227
	12.	पंचपरमेष्ठी के मूलगुण	पृ. 233
	13.	एक अद्भुत प्रक्रिया – समुद्घात	पृ. 235
	14.	आचार्य व ग्रन्थ की प्रामाणिकता	पृ. 221
	15.	क्षत्रिय धर्म – अहिंसा की परम तेजस्विता	पृ. 231
भावनाः–	16.	जीवन है पानी की बूंद	पृ. 206
भजन	17.	हम प्यासे हमको, मूर्खता का युग गया	पृ. 219, 204
स्तुति	18.	लिखा है ऐसा लेख "संस्मरण"	पृ. 230, 223
	19.	जरा सोच लो समक्ष लो	पृ. 240
	20.	पूर्णोदय दोहावली	शु.पृ. 72
	21.	कल्याण मंदिर स्तोत्र (23–44)	शु.पृ. 24
स्तोत्रः–	22.	सुनीति शतक (76–100)	शु.पृ. 208
कहानियाँ	23.	भक्तामर स्तोत्र (37–48) अर्थ सहित	पृ. 142
संस्मरण	24.	एकीभाव स्तोत्र (19–24) अर्थ सहित	पृ. 190
अन्य	25.	तीन लाख की तीन बाते	पृ. 214
	26.	परोपकार, सुविचार	पृ. 220
	27.	समय का मूल्य	पृ. 222
	28.	दुख का कारण, मोह का कार्य	पृ. 234, 239
	29.	जिन सहस्त्रनाम "उपसंहार"	शु.पृ. 60
	30.	वृहद् द्रव्य संग्रह (गाथा उच्चारण मात्र)	शु.पृ. 185
	31.	ज्ञानोपयोग – सोलह से चौबीस तक के नाम	प.पृ. 14